MSM की HIV काउन्सलिंग के लिये कायदे और कानून

HIV काउन्सलिंग के लिये मार्गदर्शिका

स्वैच्छिक परीक्षण और काउन्सलिंग केन्द्रों पर प्रदान की जाने वाली

परिचय

टेस्ट से पहले काउन्सलिंग (Per Test) करने की पहला कारण क्लाइन्ट को HIV संक्रमण रोकथाम और व्यक्तिगत एवं मेडिकल फ़ायदे होते हैं जो कि वस्तुतः स्तर की जानकारी होने से ही होते हैं। मरीज की काउन्सलिंग दोस्ताना तरह से, फैसला न सुनाने वाली भाषा में, अकेले में बैठकर में करनी चाहिये, जिससे क्लाइन्ट सवाल पूछने और बात-चीत करने में अच्छा महसूस करें।

टेस्ट के बाद काउन्सलिंग (Post Test) से सही जानकारी और HIV संक्रमण के कम ख़तरे वाले व्यवहार और अच्छे स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिलती है। पोस्ट टेस्ट काउन्सलिंग में क्लाइन्ट को HIV की रोकथाम की तरीकों के बारे में बात करने का मौका मिलता है। क्लाइन्ट का टेस्ट पॉज़िटिव हो तब उसे HIV से सम्बन्धित प्राथमिक जानकारी लेने के फायदों को विस्तार पूर्वक समझा सकते हैं। फिर भी, क्लाइन्ट पार्टनरों को सूचना देने के विकल्पों के बारे में सीख सकता है।

यह दिये हुये कायदे और कानून प्री और पोस्ट काउन्सलिंग सत्र के बाहरी अंग हैं। इनमें दिये गये कायदे और कानून ज़्यादातर अनुभवी काउन्सलर के अनुभवों से लिये गये हैं। सारे बताये गये तरीके जाने पहचाने हो सकते हैं। उनके लिये जो HIV काउन्सलिंग में लिप्त हैं इन कायदे और कानूनों को अकेले व्यक्ति की काउन्सलिंग में इस्तेमाल करना चाहिये। प्री-टेस्ट सत्र में क्लाइन्ट के व्यक्तिगत ख़तरे के बारे में क्लाइन्ट के लिये इसका सीमित उपयोग हो सकता है। शायद क्लाइन्ट इस बारे में जानता न हो या उस पर बात करने के लिये तैयार न हो। दूसरी तरफ, प्री-टेस्ट काउन्सलिंग में व्यक्तिगत ख़तरे के बारे में क्लाइन्ट को अपने ख़तरे के बारे में सही जानकारी मिलती है और उसको कम ख़तरे वाले व्यवहार को अपनाने के लिये प्रोत्साहित करती है।

सलाह देने वाले को काउन्सलिंग के लिये नियम, तरीकों की किताबों को पढ़ना चाहिये। सलाह देने वालों को "गाइड लाइन्स फॉर काउन्सलिंग" को भी पूर्व-सूचना के लिये पढ़ना चाहिये। इसके अलावा एजेंसी को अपने शहर/कस्बे में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में पता करना चाहिये और यह किस पर आधारित हैं। इसमें कोई HIV टेस्ट की सरकारी या प्राइवेट सुविधा उपलब्ध है और

- *उनकी गुणवत्ता, गोपनीयता एवं उपयुक्तता*

- *परीक्षण सेवाओं के गोपनीय और गुमनाम रखे जाने के बारे में भी पता करें।*
- *यह कि पुरूष-पुरूष सेक्स, हिजड़ा और कोथियों के ख़िलाफ़ भेद-भाव और उन्हें कलंकित न समझा जाता हो।*
- *यह कि पर्याप्त और उचित काउन्सलिंग सेवायें उपलब्ध हों।*
- *कौन-कौन सी चिकित्सा सेवायें उपलब्ध हैं और उनकी कीमतें क्या हैं?*
- *क्या सहायक सेवायें और स्वयं-सहायता समूह उपलब्ध हैं।*

इसके अलावा अन्य सेवाओं के बारे में छान-बीन करनी चाहिये जैसेः दवाईयाँ और एल्कोहॉल से सम्बन्धित परेशानी के इलाज़ और मनोरोग चिकित्सा सेवायें/स्थानीय मनोरोग और कानूनी मानवाधिकार सेवाओं के बारे में भी जानकारी होनी चाहिये।

एजेंसी में काम के टेलीफोन नम्बर और पॉज़िटिव लोगों के संतुलित आहार का चार्ट और चिकित्सा सम्बन्धी जानकारियाँ अवश्य होनी चाहिये।

एजेंसी को शहर, प्रदेश और देश के सभी पॉज़िटिव समूहों के साथ जुड़ा होना चाहिये। समर्थन का कार्य हिजड़ा, कोथी, 'गे' पहचानधारी पुरूष और पुरूष-पुरूष के साथ सेक्स करने वालों के लिये भी यह सभी सेवायें आवश्यक हैं।

प्री-टेस्ट काउन्सलिंग

I. काउन्सलिंग सत्र की शुरूआत

क. काउन्सलर को ऐसा माहौल बनाना चाहिये जो दोस्ताना और सहायक हो। काउन्सलर और क्लाइन्ट के बीच के सम्बन्धों के बारे में 'सलाह देने के लिये आवश्यक निर्देशों की अभ्यास पुस्तिका' में बताया गया है।

ख. क्लाइन्ट को बता दें कि बात-चीत में उनके व्यक्तिगत मामलों और ख़तरों की छान-बीन होगी और साफ़-साफ़ बोली का प्रयोग भी हो सकता है।

ग. क्लाइन्ट को बता दें कि बात-चीत को पूरी तरह गोपनीय रखा जायेगा।

घ. क्लाइन्ट को HIV/AIDS की जानकारी के बारे में करने में उसका साहस बढ़ायें और आस-पास एक सहायक, फ़ैसला न सुनाने वाला माहौल बनायें जिससे क्लाइन्ट आरामदेह महसूस करें।

ड़. क्लाइन्ट से HIV काउन्सलिंग और टेस्टिंग पहले कभी करायी हो तो उसके बारे में पूछें।

1. क्लाइन्ट ने पहले कभी जाँच नहीं करायी है तो बात-चीत HIV संक्रमण और रोकथाम से शुरू करें।

2. उनको HIV की गुमनाम जाँच के बारे में बतायें और उसके बाद गुमनाम और गोपनीय जाँच के बीच अन्तर बतायें।

3. क्लाइन्ट अगर जाँच में निगेटिव पाया जाता है और वह ख़तरे वाला व्यवहार कर रहा है, तो काउन्सलिंग को HIV टेस्ट दोबारा करवाने को लेकर शुरू करें। अगर टेस्ट हुये छः महीने हो गये हैं और तब से उसे किसी ख़तरे की कोई सम्भावना नहीं है। अगर क्लाइन्ट चाहता हो तो क्लाइन्ट को काउन्सलिंग के विकल्पों और दोबारा जाँच के लिये कहें।

4. क्लाइन्ट जाँच में पॉज़िटिव पाया गया हो तो निश्चित कर लें कि क्लाइन्ट को पर्याप्त चिकित्सा और सहायक सेवायें प्राप्त हो रही हैं। अगर क्लाइन्ट की देखभाल नहीं हो रही है तो आप अपने शहर में उपलब्धता एवं भौतिकता के आधार पर प्राप्त सुविधायें उपलब्ध करायें और निश्चित कर लें कि क्लाइन्ट को उपयुक्त सहायक सेवायें, स्वयं-सहायता समूह द्वारा प्राप्त हो रही हैं।

II. HIV संक्रमण और रोकथाम

क. HIV/AIDS की सामान्य जानकारी दें

क्लाइन्ट से पूछे कि HIV, जो वायरस AIDS का कारण होता है वह उसके बारे में क्या जानता है? HIV जो AIDS का कारण बनता है उसके बारे में खुलकर बतायें। HIV के संक्रमण से शरीर के भीतर रोगों से लड़ने वाला तन्त्र कमजोर हो जाता है। जब शरीर का रोगों से लड़ने वाला तन्त्र कमजोर हो जायेगा तब शरीर संक्रमण से नहीं लड़ पायेगा। HIV संक्रमण का सबसे गम्भीर नतीजा AIDS होता है।

एक व्यक्ति AIDS संक्रमित है तो वह स्वस्थ्य इम्यून तन्त्र/प्रणाली वाले व्यक्ति के मुकाबले थोड़े से ख़तरे से भी बीमार पड़ सकता है। एक व्यक्ति को HIV से AIDS की अवस्था तक पहुँचने में ज़्यादा से ज़्यादा दस साल या उससे ज़्यादा लग सकते हैं। अभी तक इसकी जानकारी कम है कि सभी व्यक्ति जिन्हें HIV संक्रमण है, उन्हें ही अन्त में AIDS होगा। बहुत से लोग जो HIV संक्रमित हैं, वह स्वस्थ्य हैं और वह बीमार भी नहीं हैं, यह भी हो सकता है कि वे इस संक्रमण के बारे में जानते ही न हों। वह संक्रमित व्यक्ति जिसमें संक्रमण के कोई लक्षण न दिखें तो वह बिना अनजाने में भी HIV संक्रमण दूसरों में फैला सकता है। HIV एण्टीबॉडी टेस्ट उपयुक्त है क्योंकि किसी भी मरीज में यह पता कर पाना बहुत ही मुश्किल है कि उसमें कभी HIV के लक्षण दिखाई दिये हों, किसी का HIV स्तर जानने से स्वास्थ्य वातावरण न होने पर भी उसके स्वास्थ्य के लिये योजना बनाने में मदद मिल सकती है।

ख. संक्रमण और रोकथाम की जानकारी

1. HIV संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को संक्रमण कुछ ख़ास तरह के व्यवहारों को अपनाने के कारण होता है इसके बारे में विस्तार से बतायें। कोई भी व्यक्ति जो संक्रमित है तो वह दूसरों में भी संक्रमण फैला सकता है।

- बिना कन्डोम के (योनि या गुदा) मैथुन या कन्डोम का गलत इस्तेमाल करने से;
- मुँह में छाले/घावों, खून बहते मसूड़ों या मासिक रक्त स्राव की उपस्थिति में मुख-मैथुन (योनि या लिंग लेहन) करना;
- सुईयों के परस्पर इस्तेमाल, अन्य कार्यों, एवं अन्य मादक पदार्थों के इस्तेमाल आदि से;
- गर्भावस्था से, जन्म के द्वारा और स्तनपान से बच्चों में संक्रमण

2. एक या उससे ज़्यादा सेक्स पार्टनर रखने से HIV और यौन रोगों के संक्रमण के ख़तरे की सम्भावना और भी बढ़ जाती है। *एक संक्रमित पार्टनर से सम्बन्ध रखने से भी HIV संक्रमण हो सकता है।*

3. HIV संक्रमण के ख़तरे के बारे में बतायें कि भेदक यौन-व्यवहार (गुदा या योनि मैथुन) में बड़े आकार वाले लेटेक्स कन्डोम के इस्तेमाल से इसके ख़तरे को कम कर सकते हैं। और मुख मैथुन के ख़तरे के बारे में और इस व्यवहार में उचित कन्डोम के इस्तेमाल की सलाह दें।

इसके अलावा कन्डोम यौन रोगों की रोकथाम में भी मदद कर सकता है।

कोई भी अवरोधक यहाँ तक कि कन्डोम भी 100% सुरक्षा नहीं देता है क्योंकि सही तरह से कन्डोम का इस्तेमाल न करने से या उत्तमता अच्छी न होने के कारण भी कन्डोम फट सकता है। काउन्सलिंग में कन्डोम के इस्तेमाल पर ज़ोर दें। कन्डोम इस्तेमाल में स्थिरता, सही तरह से उपयोग, बाद में कन्डोम को बिना नुकसान पहुँचाये उपयोग के बारे में बतायें। पानी आधारित चिकनाई के इस्तेमाल से यह और भी आसान हो सकता है। इस तरह की काउन्सलिंग में कन्डोम के इस्तेमाल की स्पॉट प्रमाणिकता को भी शामिल करना चाहिये।

कन्डोम हानिकारक स्थिति में और अधिक समय तक रखने से भी ख़राब हो सकता है। काउन्सलिंग में क्लाइन्ट को कन्डोम के बारे में बतायें कि उसकी एक्सपायरी की तारीख से, ज़्यादा गर्म जगह रख़ने से, कन्डोम पर पेट्रोलियम आधारित चिकनाई के इस्तेमाल से कन्डोम के ख़राब होने की सम्भावना बढ़ जाती है। जिसके परिणामस्वरूप कन्डोम फट सकता है। क्लाइन्ट को यह सलाह दें कि कभी भी कन्डोम को दोबारा इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। क्लान्ट को कन्डोम के सही इस्तेमाल करना और भेदन के बाद कन्डोम को सही तरह से बाहर निकालना चाहिये जैसेः कन्डोम निकालते/उतरते समय उसके बाहरी हिस्से को ऊपर की तरफ से पकड़कर निकालना चाहिये चाहे स्खलन हुआ हो या न हुआ हो। यह कन्डोम के फिसलने और वीर्य या वीर्य से पहले निकलने वाले पदार्थ को बाहर गिरने की रोकता है।

4. सुईयों द्वारा HIV संक्रमण होने के बारे में बतायें हो सकता है कि वह दवाईयों का इस्तेमाल छोड़ दे। इस ख़तरे को, परस्पर सुईयों के इस्तेमाल छोड़ने, या आपस में साफ़ सुईयों का इस्तेमाल करने से, रूई और पानी का दोबारा इस्तेमाल न करने से, कम किया जा सकता है। इन्जेक्शन आदि ब्लीच (सुई और सिरिंज से दो बार ब्लीच भरकर बाहर निकालें और फिर साफ़ पानी को) से साफ़ हो सकते हैं। हर बार इस्तेमाल करने से पहले सुईयों आदि को साफ़ करें। सुईयों द्वारा

दवाईयों का प्रयोग करने वालों को (ख़ाल में सुई घुसेड़ना या नस में सुई घुसेड़ना) बाहर से हर बार साफ़ और सुरक्षित सुईयाँ और सिरिंज ही खरीदनी चाहिये।

HIV संक्रमित व्यक्ति के साथ, या कई लोगों के साथ सुईयों के परस्पर इस्तेमाल से भी संक्रमण की सम्भावना बढ़ जाती है, जैसा कि यौन सम्पर्क में होता है। उसके बाद HIV के संक्रमण का स्तर अकेले निश्चयपूर्वक शामिल होने पर, परस्पर सुईयों के इस्तेमाल से और किसी के साथ काम करने से ख़तरा नहीं हो सकता।

5. HIV संक्रमण साधारण तौर-तरीकों के सम्पर्क से नहीं फैल सकता जैसेः

- हाथ मिलाने से
- एक साथ पीने और एक ही बर्तन में खाना खाने से
- छींकने और खाँसने से
- सुलभ शौचालय के इस्तेमाल से
- संक्रमित व्यक्ति के आस-पास रहने से

शरीर के अन्य तरल पदार्थ जैसेः आँसू, लार, पेशाब आदि से HIV संक्रमण फैलने के कोई प्रमाण नहीं पाये जाते।

खुले जख़्म या घाव न हो तो सूखा चुम्बन सुरक्षित है। गहरे चुम्बन में अगर मुँह के अन्दर कोई घाव या ज़ख्म या मुँह के अन्दर खून मौजूद है तो संक्रमण का ख़तरा रहता है। यह पता कर पाना काफ़ी मुश्किल है कि मुँह में खून (ब्रश करने से लगभग खून निकल आता है) मौजूद है या नहीं।

काउन्सलिंग में इस बात पर ज़ोर देना चाहिये कि साधारण तरह के यौन व्यवहार करने से संक्रमण नहीं फैलता।

III. HIV टेस्ट के लिये बात-चीत

क. क्लाइन्ट को विस्तार से बतायें

सभी तरह के यौन व्यवहार, परस्पर सुईयों का प्रयोग करने वालों को HIV टेस्ट के लिये प्रेरित करें। HIV एन्टीबॉडी टेस्ट द्वारा ही संक्रमण का पता चल सकता है। इसके अलावा, निजी और चिकित्सीय लाभ भी HIV एन्टीबॉडी स्तर को जानने पर ही ले सकते हैं।

ख. क्लाइन्ट को टेस्ट करवाने के फ़ायदे बतायें

1. अगर टेस्ट का परिणाम निगेटिव आता है और क्लाइन्ट अगर दस महीनों तक किसी अधिक ख़तरे वाले व्यवहार में लिप्त नहीं है तो इसका मतलब है कि क्लाइन्ट को HIV संक्रमण नहीं हुआ है, उचित हो तो दोबारा जाँच करने की बात करें।

2. क्लाइन्ट अगर संक्रमित नहीं है तो वह कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर उस पर अमल करें। नीचे दिये कुछ ख़तरों को कम करने वाले कदम उठाने से परहेज़ करने से (दोबारा उन्हीं कारणों को दोहराने पर जिनसे संक्रमण हुआ और उसकी रोकथाम हो सकी) संक्रमण की रोकथाम की जा सकती है।

3. अगर टेस्ट के बाद रिजल्ट पॉज़िटिव आता है तो इसका मतलब यह है कि क्लाइन्ट HIV से संक्रमित है। यह जानना बहुत आवश्यक है, क्योंकि इसके बाद ही क्लाइन्ट चिकित्सीय सहायता, चिकित्सीय मूल्यांकन उपचार (अगर स्थानीय उपचार उपलब्ध है) और जीने के लिये एक स्वस्थ्य योजना बना सकता है।

अगर क्लाइन्ट शादी-शुदा है और उसकी पत्नी गर्भवती है और उनका एक छोटा बच्चा भी है।

4. बच्चे को भी विशेष चिकित्सकीय देखभाल की ज़रूरत होती है जैसेः
- बच्चे की बार-बार जाँच और चिकित्सकीय मूल्यांकन करवायें जिससे यह पता चल सके कि भ्प्टसंक्रमण हुआ है।
- ख़ास तरह के टीके (सक्रिय पोलियो के टीके) लगवायें, अगर HIV एन्टीबॉडी पाज़िटिव और संक्रमित है।
- रोजाना देखभाल करना अगर संक्रमण हुआ और सही इलाज़ अपनाया है।

ग. टेस्ट का परिणाम करने के लिये मानसिक और भावनात्मक रूप से दोबारा विचार करें

क्लाइन्ट को बता दें कि HIV टेस्ट के परिणाम के बारे में चिन्ता करना एक आम बात है। क्लाइन्ट को भी यह तसल्ली दिलायें कि आप उसकी (मानसिक और भावनात्मक रूप से भी) आवश्यकता पड़ने पर मदद करेंगे।

घ. HIV एन्टीबॉडी और उसके तरीके पर पुनः विचार करें

1. HIV एन्टीबॉडी जाँच से यह पता चलता है कि व्यक्ति के HIV का संक्रमण है या नहीं इससे यह पता नहीं चलता कि व्यक्ति को AIDS है या नहीं। कोई भी खून की जाँच द्वारा यह नहीं पता चल सकता कि व्यक्ति को AIDS है।

2. क्लाइन्ट को बतायें कि टेस्ट परिणाम आने में करीब तीन हफ़्तों का समय लग सकता है। परिणाम पोस्ट-टेस्ट सत्र में दिये जाते हैं और यह केवल क्लाइन्ट को ही दिया जाता है।

IV. HIV काउन्सलिंग और टेस्ट के विकल्प

क्लाइन्ट को गोपनीय और अनाम काउन्सलिंग और टेस्ट के बीच अन्तर को बतायें।

1. गोपनीयः गोपनीय काउन्सलिंग और टेस्ट के चिकित्सीय तौर पर होती है और उसके फायदे भी बतायें गोपनीय जाँच में चिकित्सीय देखभाल और सेवायें भी ली जा सकती हैं या उपलब्ध करायी जा सकती हैं। भ्प्टकाउन्सलिंग और टेस्ट में टेस्ट का परिणाम, मरीज़ का चिकित्सीय रिकॉर्ड और जानकारियाँ सम्मिलित होती हैं। खून का नमूना और टेस्ट का परिणाम प्रयोगशाला द्वारा केवल कोड नम्बर के आधार पर दिया जाता है न कि नाम के द्वारा।

2. अनामः इसमें कोई भी व्यक्तिगत जानकारी किसी भी समय नहीं पूछी जाती। रिकॉर्ड और ख़ून का नमूना केवल कोड के द्वारा पहचाना जाता है।

V. भेदभाव

क्लाइन्ट को सलाह दें कि अपने HIV टेस्ट के बारे में बहुत सावधानीपूर्वक दूसरे व्यक्तियों को बतायें। दूसरे व्यक्तियों के सामने अपने टेस्ट के बारे में बताने पर वह आपके ख़िलाफ़ भेदभाव कर सकते हैं। भेदभाव के फलस्वरूप यह आपके काम, घर का बुरा असर पड़ सकता है और अन्य विपरीत (पारिवारिक) असर पड़ सकते हैं।

पोस्ट–टेस्ट काउन्सेलिंग–HIV निगेटिव के लिये

I. टेस्ट परिणाम

मरीज़ को एन्टीबॉडी टेस्ट का परिणाम लेना चाहिये।

क. पोस्ट–टेस्ट काउन्सेलिंग के दौरान टेस्ट परिणाम दें।
ख. क्लाइन्ट को प्रयोगशाला वाली स्लिप टेस्ट परिणाम के साथ दिखा दें।
ग. क्लाइन्ट को उसके परिणाम को महसूस करने का समय दें और उसकी भावना को ज़ाहिर करने में और सम्बन्ध बनाने में उसका साहस बढ़ायें।
घ. क्लाइन्ट को समझायें कि वह जल्दी ही इसको समझें।

II. निगेटिव टेस्ट के परिणाम का मतलब

निगेटिव परिणाम आने का करीब–करीब हमेशा यह मतलब होता है कि HIV संक्रमण नहीं हुआ है। इसके बारे में बतायेंः

क. क्लाइन्ट अगर पिछले छः महीनों में ख़तरे वाला व्यवहार नहीं कर रहा है तो क्लाइन्ट को काफ़ी हद तक HIV संक्रमण का ख़तरा नहीं है क्योंकि पार्टनरों ने अपने HIV स्तर के बारे में जिक्र नहीं किया और क्लाइन्ट ने अपने HIV के बारे में बताया लेकिन उसको संक्रमण नहीं हुआ।

ख. क्लाइन्ट अगर पिछले छः महीनों में ख़तरे वाला व्यवहार कर रहा था तब हो सकता है वह संक्रमित हो फिर भी एन्टीबॉडी अभी तैयार न हुये हों। साधारण तौर पर संक्रमण के 6-12 हफ़्तों में एन्टीबॉडीज़ बनने लगते हैं। कुछ लोगों में समय ज़्यादा (छः महीने या उससे ज़्यादा) लगता है और बहुत ही कम संक्रमित लोगों में HIV एन्टीबॉडीज़ कभी भी नहीं बनते। जब उचित हो और क्लाइन्ट के ख़तरे के ऊपर निर्भर हो तब HIV एन्टीबॉडीज़ के लिये दोबारा टेस्ट करवाने की बात करें।

ग. HIV निगेटिव का यह मतलब नहीं कि मरीज़ संक्रमण से पूरी तरह से सुरक्षित है। बचाव न करने पर HIV के संक्रमण का ख़तरा हमेशा रहता है।

III. ख़तरा कम करना

क्लाइन्ट को निगेटिव टेस्ट परिणाम का व्यक्तिगत ख़तरे से सम्बन्ध को समझायें।

क. ख़तरे वाला यौन व्यवहार

अगर उचित हो तो क्लाइन्ट को अपने यौन साथी को भी ख़तरा कम करने वाली काउन्सलिंग दें।

प्रायः यौन व्यवहार या दवाइयों का इस्तेमाल करने वाले साथी के बारे में पता लगाना भरोसे के लायक नहीं होता। फिर भी क्लाइन्ट को बतायें कि भेदक सेक्स बिना कन्डोम के नहीं करना चाहिये। जब तक वह अपने यौन साथी का निश्चित रूप से ख़तरे वाले व्यवहार और HIV स्तर के बारे में न जानता हो। एक तरह से दोनों के संक्रमण के बारे में निश्चित रूप से तब पता चल पायेगा जब दोनों पार्टनरों की जाँच हुई हो और अगर जाँच में निगेटिव पाये गये हो और उसके बाद से कोई ख़तरे वाले व्यवहार नहीं कर रहें हों।

यौन व्यवहार के बारे में बात करें जो लोगों को ख़तरे (अगर वह निश्चित रूप से यौन साथी के HIV स्तर और ख़तरे वाले व्यवहार के बारे में नहीं जानता है) की तरफ ले जाता है। कम ख़तरे और ज़्यादा खतरे वाले व्यवहार के बारे में बतायें।

1. पुरूष यौन साथी के साथ गुदा-मैथुन बिना बड़े आकार के लेटेक्स कन्डोम के साथ करें;

2. योनि मैथुन बिना बड़े आकर के लेटेक्स कन्डोम के साथ करें;

3. मुख़-मैथुन को भी जब मुँह के अन्दर ज़ख्म, छाले और मसूड़ों से ख़ून या मासिक धर्म में ख़ून निकल रहा हो न करें;

ख. दवाईयों के इस्तेमाल से ख़तरा

क्लाइन्ट अगर दवाइयों का इस्तेमाल कर रहा है या इस्तेमाल करने के लिये सोच रहा है तो काउन्सलिंग में दवाईयों के इस्तेमाल के बारे में बात करना उचित है।

1. दवाईयों के इस्तेमाल न करने से होने वाले HIV के ख़तरे से बचने के लिये दवाईयों का इस्तेमाल न करना ज़्यादा अच्छा है इसके बारे में बतायें।

2. यद्यपि सभी दवाईयों के सेवन में परहेज़ बरतने के लिये साहस बढ़ाना चाहिये, सभी दवाईयों का सेवन करने वालों को जागरूक करना चाहिये किः

- सुईयों का आपस में इस्तेमाल और दूसरे मादक दवाओं के में इस्तेमाल न करने से
- हर बार इस्तेमाल करने से पहले सभी भेदक उपकरणों की सफ़ाई (सुई और सिरिंज को दो बार ब्लीच से और फिर पानी से साफ़ करें)

3. क्लाइन्ट को दवाईयों के सेवन के उपचार कार्यक्रम में नाम लिखवाने या रूकने के लिये प्रोत्साहित करें।

ग. दूसरी दवाईयों के सेवन

नीचे दिये गये पदार्थों का सेवन करने से मरीज़ को संक्रमण का ख़तरा और भी बढ़ जायेगा क्योंकि इसके सेवन के बाद सुरक्षित सेक्स करना बहुत मुश्किल हो जाता हैः

- शराब/एल्कोहाल
- हशीश/मरिजूआना
- बारबिच्यूरेट्स अन्य आराम देने वाली दवाईयाँ
- एम्फेटामाइन्स अन्य जोश दिलाने वाली दवाईयाँ
- हेल्यूसिनोजन्स्
- कोकेन, क्रेक
- हेरॉइन

HIV संक्रमण का ख़तरा कोकेन के सेवन, जो कि इन्जेक्शन और धूम्रपान के साथ किया जाता है, से और भी बढ़ जाता है। इसके बहुत से कारण होते हैं। अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि हेरॉइन के मुकाबले कोकेन का इन्जेक्शन आपस में इस्तेमाल करने से HIV संक्रमण जल्दी फैलता है। यह हो सकता है कि कोकेन के सेवन में इन्जेक्शन का इस्तेमाल बहुत जल्दी-जल्दी होता है। जो व्यक्ति कोकेन को चिलम में पीते हैं उन्हें भी HIV ख़तरा, असुरक्षित यौन सम्बन्धों के कारण होता है। जो कि दवाईयों के लिये आपस में यौन सम्बन्ध बनाते हैं। चिलम पीने वाले भी इन्जेक्शन द्वारा कोकेन और हेरोइन का सेवन करते क्योंकि उससे चिलम के मुकाबले ज़्यादा मजा मिलता है।

IV. निजी रोकथाम की तरकीब/युक्ति

क. HIV के व्यक्तिगत जोख़िम को घटाने की तरकीबों के विकास में क्लाइन्ट की मदद करें।

ख. नीजि रोकथाम की ज़रूरतों के लिये क्लाइन्ट को तैयार होने में मदद करें। जो भी कठिनाईयाँ हों उन पर उपयुक्त समय से पहले बातचीत कर लें।

ग. कन्डोम के सही इस्तेमाल के बारे में जानकारी दें। मरीज़ को सलाह दें कि एक ही कन्डोम को दोबारा इस्तेमाल न करें।

घ. यदि HIV का पिछला जोखिम छः महीने के बीच में हुआ था, तो क्लाइन्ट को दोबारा टेस्ट के लिये प्रेरित करें।

ङ. मरीज़ के साथ यौनिक या सुईयों का परस्पर इस्तेमाल करने वाले सहयोगी जो कि HIV के ख़तरे की चपेट में हों, के बारे में बातचीत करें। उनके पार्टनरों के महत्व के बारे में बतायें। जो कि उसके HIV स्तर के बारे में जानते हों।

यदि मरीज़ और पार्टनर दोनों पिछले और वर्तमान टेस्ट में निगेटिव हैं तो उनके बीच HIV संक्रमण का कोई ख़तरा नहीं है।

V. साहित्य प्रदान करना

HIV संक्रमण और “HIV संक्रमण की रोकथाम कैसे करें” के साथ-साथ सभी मरीज़ों के लिये यौन-कर्म ख़तरों को घटाने, दवाओं के इस्तेमाल के ख़तरों (अर्थात बिना सोचे समझे सुईयों के इस्तेमाल), और HIV काउन्सलिंग के बारे में जानकारियों और जाँच कार्यक्रमों आदि के बारे में लिखित सूचनायें (यदि क्लाइन्ट पढ़ा-लिखा हो) दें।

पोस्ट-टेस्ट कान्सलिंग-सेरोपॉज़िटिवः

HIV टेस्ट की जाँच को पढ़ना बेहद तनावपूर्ण होता है, अपने आपको किसी चिन्ता या परेशानियों से घिरे मरीज़ के साथ काम करने के लिये तैयार करें। एजेंसी की तरफ से सहायता देने वाले को एजेंसी के उद्देश्यों से अच्छी तरह परिचित होना चाहिये।

I. जाँच का परिणाम

मरीज़ को HIV एन्टीबॉडी की जाँच का परिणाम खुद लेना चाहिये।

क. जाँच का परिणाम देते हुये, पोस्ट-टेस्ट काउन्सलिंग शुरू करें।

ख. क्लाइन्ट को प्रयोगशाला में स्लिप के साथ रिकॉर्ड और टेस्ट के परिणाम दिखायें।

ग. क्लाइन्ट को टेस्ट के परिणाम पर प्रतिक्रिया के लिये समय दें और मरीज़ को उसकी भावनायें और चिन्तायें व्यक्त करने के लिये प्रेरित करें।

घ. क्लाइन्ट को उसके साथ सम्बन्ध बनाने में मदद करें।

II. जाँच के परिणामों का सामना करने में मरीज़ की मदद करें।

क. सहायक और प्रोत्साहित करने वाली भाषा का इस्तेमाल करें।

ख. क्लाइन्ट की भावनायें जैसेः अविश्वास, चिन्तायें, नाराज़गी, शर्म, तनाव, भावहीनता या उपेक्षा, और मरने का डर आदि का सामना करने के लिये अपने आप को तैयार करें।

- क्लाइन्ट के साथ ठहरें और परिस्थिति के हिसाब से रूख़ अपनायें और क्लाइन्ट की चिन्ताओं को सुनें
- मसले को सुलझाने में मदद करें;
- अन्य परेशानियों के समय की पहचान और सामना करने में तकनीकी मदद करें।
- क्लाइन्ट को परेशानी के समय में सहायक सेवाओं और मरीज़ को फोन का इस्तेमाल करने के लिये गोपनीय स्थान प्रदान करें।

ग. क्लाइन्ट ने जाँच के परिणामों को जानने के बाद कैसा महसूस किया इसके बारे में बातचीत करें और यह भी पूछे कि उसने पिछले 48 घंटों और उससे ज़्यादा समय में इसके बारे में सोचने के लिये कितना समय खर्च किया।

घ. प्री-टेस्ट सत्र में सहायता प्रणालियों की पहचान के बारे में क्लाइन्ट को याद दिलायें, पूछें कि क्लाइन्ट किसे अपनी जाँच के बारे में बतायेगा जैसेः किसी पारिवारिक सदस्य, दोस्त या अन्य व्यक्ति को, यदि क्लाइन्ट किसी को बताने के बारे में सोचता है तो बातचीत करें कि कैसे उस व्यक्ति को बतायें और बताने पर क्या परिणाम होगा।

ड़. क्लाइन्ट को भावनात्मक सहारे के लिये किसी अन्य के बारे में बतायें।

III. पॉज़िटिव टेस्ट के परिणाम का मतलब

परिणाम यह बताता है कि HIV का एन्टीबॉडी उपस्थित था।

क. HIV पॉज़िटिव परिणाम का मतलब है

1. क्लाइन्ट HIV संक्रमित है और वायरस के एन्टीबॉडीज़् का निर्माण हो गया है।

2. क्लाइन्ट के शरीर में वायरस सक्रिय हैं और दूसरों को भी संक्रमित कर सकते हैं।

ख. पॉज़िटिव टेस्ट के परिणाम का मतलब यह नहीं है कि मरीज़ को AIDS ही हो,

IV. मेडिकल फॉलोअप

क. जितनी जल्दी सम्भव हो चिकित्सीय-देखभाल के बारे में बतायें।

1. प्रयोगशाला जाँच से इस बात का पता चलता है कि इम्यून प्रणाली कैसे काम कर रही है और HIV सम्बन्धित संक्रमणों एवं कैंसर की उपस्थिति का भी पता चलता है।

2. HIV संक्रमण की गति को धीमा करने के लिये और कुछ अन्य संक्रमणों की रोकथाम के लिये उपचार भी उपलब्ध हैं।

ख. इसमें मेडिकल मूल्यांकन भी शामिल होगा व्याख्या कीजियेः

1. मेडिकल और व्यक्तिगत इतिहास;

2. शारीरिक परीक्षण;

3. इम्यून प्रणाली के क्रियातन्त्र की जाँच;

4. अन्य संक्रमणों की जाँच जैसेः यौन रोग व टी०बी०;

ग. अच्छे स्वास्थ्य की देख-रेख के लिये बताये गये अभ्यासों की महत्वता पर ज़ोर दें।

घ. नयी मेडिकल चिकित्साओं के बारे में जानकारी और निरन्तर मेडिकल जाँच के मेडिकल चिकित्सा कार्यक्रम में ठहरने के लिये दबाव डालें।

ड़. पॉजिटिव टेस्ट के परिणाम का मतलब पार्टनर और बच्चे भी HIV संक्रमित हो सकते हैं। इस बारे में बतायें किः

यदि यह क्लाइन्ट का पहला HIV टेस्ट है तो क्लाइन्ट को पार्टनरों और बच्चों का HIV एन्टीबॉडी टेस्ट और मेडिकल मूल्यांकन के लिये प्रेरित करना चाहिये। क्लाइन्ट को पार्टनरों और बच्चों की चिकित्सा और काउन्सलिंग के सन्दर्भ में सहायता प्रदान करें।

यदि क्लाइन्ट विवाहित है और उसकी पत्नी गर्भवती है या अभी हाल ही में बच्चा हुआ हो, तब उसे यह बताने की ज़रूरत होगीः

1. सभी बच्चे माँ के एन्टीबॉडी के साथ पैदा होते हैं। इसलिये यदि माँ में HIV के एन्टीबॉडीज़ हैं, तो उस बच्चे के पैदा होने पर HIV एन्टीबॉडी टेस्ट करवाना होगा।

2. माँ के संक्रमित होने से यह ज़रूरी नहीं कि बच्चा HIV संक्रमित हो। शोध अध्ययनों से पता चला है कि संक्रमित महिला से जन्मे लगभग 30-40% बच्चे संक्रमित होते हैं।

3. यदि बच्चा संक्रमित नहीं है तो बच्चे की निगेटिव जाँच 18-24 माह की उम्र में करवाना चाहिये।

4. यदि बच्चा संक्रमित है तो यह मुमकिन है कि जन्म के समय बच्चा की जाँच का परिणाम पॉज़िटिव हो, या कुछ समय के लिये जाँच का परिणाम निगेटिव हो, और बाद में बच्चे के शरीर में एन्टीबॉडीज़ पैदा होने के बाद फिर परिणाम पॉज़िटिव हो जाये।

5. बच्चे के लिये यह ज़रूरी है कि नियमित रूप से किसी अच्छे डॉक्टर से, जिसे HIV की अच्छी जानकारी हो, चिकित्सीय देख-रेख करायें और यह भी ज़रूरी है कि जो डॉक्टर

चिकित्सकीय देख-रेख कर रहा है उसे माँ के संक्रमण के बारे में पता हो। जिससे बच्चे के स्वास्थ्य स्तर की नज़दीकी से देख-भाल हो सके।

6. जो महिलायें स्तनपान कराती हैं या स्तनपान कराने के बारे में सोच रही हैं, उन्हें भी किसी अच्छे डॉक्टर जिसे HIV की अच्छी जानकार हो, उससे पॉज़िटिव HIV संक्रमण के ख़तरे के बारे में बातचीत करनी चाहिये।

7. यदि क्लाइन्ट भवि य में बच्चों के बारे में सोच रहा है तो उसे किसी अच्छे डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिये, जिसे HIV की अच्छी जानकारी हो, और वह सन्तानोत्पत्ति के विकल्पों के बारे में बता सके।

V. संक्रमण में कमी

इस बात पर ज़ोर दें कि यद्यपि क्लाइन्ट में HIV संक्रमण के लक्षण या चिन्ह न हों तब भी इनसे क्लाइन्ट में HIV संक्रमण हो सकता हैः

- बिना कन्डोम के साथ सेक्स या कन्डोम के गलत इस्तेमाल से;
- नसों में सुईयों के परस्पर इस्तेमाल से, कार्यों, और अन्य दवाओं के सेवन से;

HIV का संक्रमण प्रतिदिन के क्रियाकलापों या केवल छूने आदि से नहीं फैलता है इस बात पर ज़ोर देकर बतायें, ख़तरे को कम करने वाली योजना के बारे में बातचीत करें, जो कि क्लाइन्ट के यौन-व्यवहार और/दवाओं के इस्तेमाल की समीक्षा के ऊपर आधारित है, नीचे दिये गये तथ्यों को विस्तारपूर्वक बतायें जिनसे क्लाइन्ट ना तो खुद संक्रमित हो और ना ही HIV का संक्रमण दूसरों में फैलाये। ख़तरों को कम करने वाली योजना के बारे में क्लाइन्ट और उसके पार्टनर को सुझाव दें।

क. यौन खतरों में कमी

1. HIV संक्रमण को केवल योनि मैथुन, मुख मैथुन और गुदा मैथुन न करने पर ही रोका जा सकता है।

2. गुदा मैथुन या मुख मैथुन करते समय ध्यान रखें कि किसी शारीरिक द्रव्य (जैसेः वीर्य ख़ून या योनि स्राव) से सम्पर्क न होने पर संक्रमण से बचा जा सकता है। इसलिये पुरूष को हमेशा पूर्ण आकार वाला नया कन्डोम इस्तेमाल करना चाहिये। सेक्स के दौरान कन्डोम के इस्तेमाल से

यह ख़तरा पूरी तरह कम नहीं होता है। कन्डोम का सही तरह इस्तेमाल करना और कन्डोम को दोबारा इस्तेमाल न करने के बारे में बतायें।

3. एक दूसरे के साथ मुख मैथुन (लिंग अथवा योनि) करने पर अगर जननांगों में किसी प्रकार की चोट या घाव है तब HIV संक्रमण का ख़तरा और भी बढ़ जाता है।

4. शादी शुदा व्यक्ति को जन्म नियन्त्रण के तरीके और रोगों से होने वाले ख़तरों के बारे में बतायें (जैसे श्रोणीय उत्तेजक रोग) संक्रमण IVD के इस्तेमाल से भी होता है। क्लाइन्ट को जन्म नियन्त्रण के तरीकों के बारे में याद दिलायें जैसेः कोई औपचारिक दवा की गोली, इसके अलावा HIV सहित इन रोगों के संक्रमण का और कोई बचाव नहीं है। गर्भ निरोधक एवं ग्रीवा सम्बन्धी कैप्सूल केवल बचाव के रूप में कार्य करते हैं। जो HIV को फैलने से रोकते हैं।

ख. दवाईयों के सेवन के ख़तरों में कमी

जो व्यक्ति दवाईयों का इस्तेमाल कर रहे हैं या करने की सोच रहे हैं उनके साथ दवाइयों का सूईयों द्वारा (नसों की शिराओं में) इस्तेमाल करने के सही तरीकों के बारे में विस्तार पूर्वक बात करें। जैसेः

1. यदि सुईयों का दोबारा इस्तेमाल न किया जाय तो HIV संक्रमण को रोका जा सकता है।

2. सूई एवं उपकरणों को इस्तेमाल के बाद अच्छी तरह से साफ़ (सूई एवं सिरिंज को दो बार ब्लीच से और फिर पानी से साफ़ करें)

क्लाइन्ट को दवाईयों के सेवन के उपचार कार्यक्रम में नाम लिखवाने या रूकने के लिये प्रोत्साहित करें।

व्यक्ति को बतायें कि नीचे दिये गये पदार्थों के सेवन से और असुरक्षित यौन सम्बन्ध बनाने से HIV निगेटिव को भी HIV संक्रमण होने का ख़तरा रहता है।

- शराब/एल्कोहाल
- हशीश/मरिजूआना
- बारबिच्यूरेट्स अन्य आराम देने वाली दवाईयाँ
- एम्फेटामाइन्स अन्य जोश दिलाने वाली दवाईयाँ
- हेल्यूसिनोजन्स्
- कोकेन, क्रेक
- हेरॉइन

HIV संक्रमण का ख़तरा कोकेन के सेवन, जो कि इन्जेक्शन और धूम्रपान के साथ किया जाता है, से और भी बढ़ जाता है। इसके बहुत से कारण होते हैं। अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि हेरॉइन के मुकाबले कोकेन का इन्जेक्शन आपस में इस्तेमाल करने से HIV संक्रमण जल्दी फैलता है। यह हो सकता है कि कोकेन के सेवन में इन्जेक्शन का इस्तेमाल बहुत जल्दी-जल्दी होता है। जो व्यक्ति कोकेन को चिलम में पीते हैं उन्हें भी HIV ख़तरा, असुरक्षित यौन सम्बन्धों के कारण होता है। जो कि दवाईयों के लिये आपस में यौन सम्बन्ध बनाते हैं। चिलम पीने वाले भी इन्जेक्शन द्वारा कोकेन और हेरोइन का सेवन करते क्योंकि उससे चिलम के मुकाबले ज़्यादा मजा मिलता है।

ग. अन्य ख़तरों में कमी

जिन क्लाइन्टों की जाँच में HIV पॉज़िटिव पाया जाता है। उन्हें सलाह दें किः

1. खून और खून सम्बन्धी पदार्थ, अंग, टिश्यू, छाती का दूध या वीर्य दूसरों को प्रदान न करें।

2. टूथ ब्रश, ब्लेड या अन्य वस्तुओं को आपस में न बाँटें जिनमें खून या शुक्राणु हों। इसके बारे में केवल सलाह ही दी जा सकती है। क्योंकि इनके इस्तेमाल से HIV संक्रमण नहीं देखा गया है।

3. खून और अन्य शारीरिक द्रव्य अगर त्वचा पर लग जाय तो उसे अच्छी तरह से (1/4 ब्लीच एक गैलन पानी में काफ़ी है) साफ़ करें।

घ. व्यक्तिगत जोख़िम कम करने की तरकीब

1. अपने साथी के साथ HIV संक्रमण को कम करने के उपाय और रणनीति के बारे में बात करें।

2. क्लाइन्ट को अगर कम ख़तरे वाला व्यवहार करने में कठिनाई हो रही हो तो उस बारे में बात करें।

3. क्लाइन्ट मुश्किल परिस्थितियों का सामना कैसे करेगा इस बारे में उसे मदद के तरीके बतायें।

VI. आगे की कार्यवाही की व्यक्तिगत योजना

क. चिकित्सीय और सहायक सेवायें

1. HIV पॉज़िटिव क्लाइन्ट को अच्छी चिकित्सीय सेवा के लिये सलाह दें।

2. क्लाइन्ट को आवश्यकतानुसार सहायक सेवायें उपलब्ध करायें या सलाह दें, उदाहरणः स्थानीय पॉज़िटिव लोगों का सहायक समूह के बारे में बतायें।

3. HIV पॉज़िटिव क्लाइन्ट जो दवाईयों या एल्कोहल का सेवन करता है उसे एल्कोहल या दवाईयों के सेवन के उपचार कार्यक्रम उपलब्ध करायें या सलाह दें।

क्लाइन्ट को टेलीफोन सुविधा उपलब्ध करायें और टेलीफोन इस्तेमाल करने के लिये गुप्त स्थान उपलब्ध करायें।

ख. साथी के बारे में जानकारी

HIV पॉज़िटिव क्लाइन्ट को उसके बारे में बताने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

1. क्लाइन्ट यदि HIV के लक्षण और जाँच के बारे में अपने साथी से बात करता है तो उसके बारे में पूछें।

2. क्लाइन्ट अपने साथी को उसके बारे में बताने के लिये प्रोत्साहित करें और इसके लिये प्रारूप तैयार करने में उसकी मदद करें और क्लाइन्ट किस तरह से साथियों से बात करे उसके बारे में भी बतायें।

3. यदि मुमकिन हो तो पार्टनर को काउन्सलिंग और जाँच के लिये सलाह दें या क्लाइन्ट को उसके साथी की HIV काउन्सलिंग और जाँच के लिये प्रोत्साहित करें। यदि क्लाइन्ट शिक्षित है तो उसे HIV काउन्सलिंग और जाँच के लिये लिखित सूचना दें।

4. साथी के HIV स्तर की जानकारी क्यों ज़रूरी है, इसके बारे में बतायेंः

- अगर साथी HIV पॉज़िटिव है तो उसे उपलब्ध चिकित्सा और उपचार के लिये भेजेः

- HIV का समय पर उपचार करने से संक्रमण धीमा हो सकता है और संक्रमण को बढ़ने से रोका जा सकता है।

VII. साहित्य उपलब्ध कराना

HIV के बारे में बात करें और इसका संक्रमण फैलाने वाले तरीकों के बारे में बतायें और लिखित जानकारी उपलब्ध करायें। लैंगिक ख़तरों में कमी और ड्रग्स के प्रयोग से होने वाले संक्रमण के ख़तरों से बचाव के तरीकों पर भी बात करें। (उदाहरण के लिये सुई सफ़ाई और कार्य के बारे में लिखकर दें) क्लाइन्ट को पढ़ा-लिखा होना चाहिये।

VIII. भेदभाव

क्लाइन्ट को बताये कि उनके HIV टेस्ट के बारे में लोगों को बताने में सावधान रहें। HIV सम्बन्धित सूचना के बारे में जानने के बाद लोग भेदभावपूर्ण रवैय्या अपना सकते हैं।

न्यूयार्क एड्स इन्सटीट्यूट के स्टेट हेल्थ विभाग से लिया गया

सारांश

जाँच से पहले

एक अच्छे परामर्शदाता को क्लाइन्ट से हमेशा निम्न बिन्दुओं पर बात करनी चाहिये

1. HIV/STDs और उसके ख़तरों के बारे में
2. वह जाँच क्यों करवाना चाहता है।
3. वह क्यों सोचता है कि उसे इसका ख़तरा है।
4. जाँच के तरीके क्या हैं।
5. उसके हानिकारक परिणाम क्या हैं।
6. उसके अनुकूल परिणाम क्या हैं।
7. उसके जाँच के परिणाम को कौन बतायेगा।
8. एक व्यक्तिगत यौन स्वास्थ्य सम्बन्धी नीति का विकास

जाँच के बाद

यह मुद्दे जाँच के बाद पूरे किये जाने चाहिये

1. जाँच के परिणाम का क्या उद्देश्य है?
2. उसे उस जाँच के परिणाम के साथ कैसे पेश आना है?
3. सुरक्षित यौन सम्बन्ध और सुरक्षित सूई का प्रयोग
4. स्वास्थ्य देख-भाल के बारे में
5. क्लाइन्ट के लिये देख-भाल की योजना
6. क्लाइन्ट किसे बतायेगा?
7. साथी को सूचना

काउन्सलर के अच्छा कार्य के अभ्यास करने के लिये कुछ सुझाव

1. अपने घर एवं कार्य करने वाली जगह का टेलीफोन नम्बर न दें।

2. क्लाइन्ट से समय के लिये बात करें। हमेशा क्लाइन्ट आपके द्वारा निश्चित किये गये समय का समर्थन करे। जाने के लिये कभी देर न करें और रज़ामन्दी के लिये भी ज़्यादा देर न रोकें उदाहरणः यदि एक घण्टे का समय तय किया है तो तीन घण्टे तक न रोकें अगर यह आपके दूसरे कार्यों को रद्द करता है।

3. किसी भी हालत में क्लाइन्ट से तोहफे या रूपये नहीं लेने चाहिये।

4. यह क्लाइन्ट का उत्तरदायित्व है कि वह अपनी आवश्यकतानुसार परामर्शदाता की पहचान करे यह काउन्सलर का कार्य नहीं है कि वह सभी बातों को बताये। क्लाइन्ट और काउन्सलर के बीच स्पाेट सम्बन्ध होने चाहिये। उदाहरण के लिये यह उचित नहीं होगा कि क्लाइन्ट काउन्सलर से परिवार के सदस्य की तरह से व्यवहार करे यदि ऐसा हो तो लाइन प्रबन्धक को तुरन्त सूचना दें।

एक काउन्सलर हमेशा अपनी संस्था की तरफ से सेवायें प्रदान करता है यह बात जितनी जल्दी हो सके क्लाइन्ट को बता देनी चाहिये। यह भी बहुत ज़रूरी है कि क्लाइन्ट और काउन्सलर के बीच सम्बन्धों की एक सीध तय की जाय।

5. यदि क्लाइन्ट और काउन्सलर एक समय पर सहमति नहीं होती तो काउन्सलर को क्लाइन्ट से सम्पर्क करना चाहिये और लाइन प्रबन्धक को भी जल्द से जल्द बताना चाहिये। क्लाइन्ट से भी यह उम्मीद है कि वह काउन्सलर और लाइन प्रबन्धक से सम्पर्क करेगा यदि दोनों के बीच समय से सहमति नहीं हो पाती है।

6. काउन्सलर को क्लाइन्ट से उधार पैसा न लेना चाहिये और न ही देना चाहिये।

7. काउन्सलर को क्लाइन्ट की तरफ से कोई कागज़ साइन नहीं करने चाहिये यह एक काउन्सलर का उत्तरदायित्व नहीं है और यह हमेशा याद रखना चाहिये।

8. काउन्सलर को लाइन प्रबन्धक के अलावा किसी और से भी क्लाइन्ट के बारे में बात नहीं करनी चाहिये।

9. काउन्सलर को किसी भी हाल में क्लाइन्ट के साथ रात नहीं बितानी चाहिये।

10. काउन्सलर को किसी भी हाल में क्लाइन्ट या उसके परिवार और दोस्तों के साथ यौन सम्बन्ध नहीं रखने चाहिये अगर क्लाइन्ट किसी भी तरह से आकर्षित हो तो तुरन्त लाइन प्रबन्धक को बतायें।

11. किसी भी हाल में काउन्सलर को क्लाइन्ट के साथ पहली बार में तुरन्त या लगातार ड्रग्स् इस्तेमाल नहीं करनी चाहिये अगर क्लाइन्ट गैर-कानूनी दवाओं का सेवन करता है तो तुरन्त इसके बारे में लाइन प्रबन्धक को बतायें।

12. काउन्सलर को क्लाइन्ट के साथ पहली बार में तुरन्त या लगातार एल्कोहल का सेवन नहीं करना चाहिये।

13. यदि दिये गये निर्देशों में से किसी भी निर्देश का पालन काउन्सलर के द्वारा नहीं किया जाता है तो उसके ख़िलाफ़ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी। जिसके फलस्वरूप अनुबन्ध भी तोड़ा जा सकता है।

14. यदि क्लाइन्ट द्वारा शारीरिक रूप से अथवा मौख़िक रूप से हिंसा की जाती है तो तुरन्त उससे अलग हो जायें और इसके बारे में लाइन प्रबन्धक को बतायें।

गोपनीयता का प्रमाणीकरण

मैं .... (संस्था/एजेंसी का नाम) में काम करता हूँ जो कि HIV/AIDS और पुरूष जो पुरूषों के साथ सेक्स करते हैं उनके यौन स्वास्थ्य पर कार्य करती है।

मैं समझता हूँ कि मुझे अपनी संस्था के लिये काम करना है जिसमें मुझे लोगों की गोपनीय एवं अत्यधिक गोपनीय व्यक्तिगत जानकारियों का आंकलन करना है जैसेः उनकी यौन प्रक्रियाऐं, यौन सम्बन्ध, HIV स्तर, यौन रोगों की पहचान, स्वास्थ्य, चिकित्सा, शर्तें, उपचार और परिवार तथा दोस्तों के बारे में जानकारी देना।

मैं समझता हूँ कि यह सूचनाऐं पूरी तरह से गोपनीय हैं।

मैं सहमत हूँ कि मैं कोई भी व्यक्तिगत एवं गुप्त सूचना किसी भी व्यक्ति के सामने अथवा संस्था से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति के सामने नहीं कहूँगा और न ही संस्था को जिसको यह सूचनाऐं पाने का अधिकार नहीं है।

गोपनीयता भंग करने की दशा में, मेरे ख़िलाफ़ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सकती है।

दिनांकः

नामः

हस्ताक्षरः

नाज़ फाउन्डेशन इन्टरनेशनल् के द्वारा सन् 2004 में निर्मित